बुद्धिवाद (Rationalism)

ऐतिहासिक नैतिक माप दण्ड के रूप में बुद्धिवाद की व्याख्या करें।

ऐतिहासिक दृष्टि से बुद्धिवाद के तीन रूप हैं (I) प्राचीन बुद्धिवाद, (II) मध्यकालीन बुद्धिवाद और (III) आधुनिक बुद्धिवाद इत्यादि।

(I) प्राचीन बुद्धिवाद :→ प्राचीन बुद्धिवाद को भी दो भागों में विभाजित किया जा सकता है — ~~(i) सिनिकवाद~~ और (i) सिनिकवाद (Cynicism) और (ii) स्टोइकवाद (Stoicism) (i) सिनिक मत का प्रवर्तक एन्टिथेनीज (Antethenies) थे जिस स्कूल में पढ़ते थे। उसका नाम सिनोसर्जेस था। इसलिए इनके सभी समर्थकों को सिनिक्स कहा जाता था। इन लोगों के अनुसार मानव बौद्धिक प्राणी है। बुद्धि वासनाओं पर पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहिए। नैतिक जीवन बौद्धिक जीवन है और वही मनुष्य का वास्तविक जीवन है। उसी में आनन्द है क्योंकि आनन्द और बुद्धि पर्यायवाची है। बौद्धिक व्यक्ति ही सद्गुणी है। जीवन का परम लक्ष्य सद्गुण है। सद्गुणी व्यक्ति अपने में पूर्ण होता है। विवेक उसका विशेष गुण है। उसकी इच्छाएँ न्यूनतम होती है। सिनिकवादी वैराग्यवादी है। इस मत के अनुसार आत्मा की पूर्णता आत्म निरोध में है। इस मत का मुख्य उपदेश है "प्रकृति के अनुसार रहो" (live according to nature) की।

(II) स्टोइकवाद :→ स्टोइकवाद का प्रचारक जीनो (Zeno) थे। ये जिस बरसाती में भाषण दिया करते थे उसे स्टोआपाइकिले (StoaPaikile) या रंगीन बरसाती कहलाती थी। इसी स्टोआ शब्द को लेकर जीनो के अनुयायी को स्टोइक कहा जाने लगा और इनके सिद्धान्त को स्टोइकवाद कहा गया। इन लोगों के अनुसार भी सद्गुण

ही परम शुभ है। इस मत के अनुसार कर्तव्य पालन के अभाव में सद्गुण व्यर्थ है। प्रकृति के अनुसार जीवन और बुद्धि परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है। इस मत के अनुसार ज्ञान ही सद्गुण है। ज्ञानी व्यक्ति ही शुभ-अशुभ का विवेक कर सकता है। व्यावहारिक विवेक उचित-अनुचित का निर्णय कर सकता है। ज्ञान शून्य व्यक्ति का जीवन ही आदर्श जीवन है। यह आध्यात्मिक और कल्याणकारी जीवन है। सभी मनुष्य विश्व के नागरिक हैं।

II मध्यकालीन बुद्धिवाद :→ मध्यकालीन बुद्धिवाद को ईसाई वैराग्यवाद के नाम से जाना जाता है। ईसाई वैराग्यवाद ने कभी भी जीवन के स्वाभाविक सुखों की भर्त्सना नहीं की है। लेकिन इन्होंने दैन्य, त्याग तथा इन्द्रिय निरोध और कष्ट सहन का आदर्श उपस्थित किया है। यद्यपि ईसा मत में बाह्य स्वच्छता से आन्तरिक शुद्धता को अधिक महत्व दिया गया है परन्तु ईसा के आदर्श को लेकर मध्यकालीन ईसाई सन्तों ने ऐसा कठोरतावाद उपस्थित किया जिसको सुनने मात्र से भय होने लगता है। ईसाई सन्तों ने धर्मवाक्य "जीने के लिए मरो" (die to live) को शाब्दिक अर्थों में लेकर तिल-तिल मरने का संकल्प ले लिया। फलस्वरूप अनेक सन्त बाल के वस्त्र पहनते थे अनेक सन्त इतनी कम जगह में रहते थे जहाँ पर पैर भी नहीं फैलाये जा सकते। अनेक सन्त काँटों पर सोते थे। इस प्रकार मध्यकालीन बुद्धिवाद आत्मा और शरीर के द्वैत पर आधारित था। इस मत के अनुसार शरीर को कष्ट देने से आत्मा का विकास होता है। आत्मा का विकास ही आदर्श नैतिक सुख है।

Date 9/11/20

III आधुनिक बुद्धिवाद :→ या कान्ट का कठोरतावाद :→ आधुनिक बुद्धिवाद के जनक इमैनुअल कान्ट (immanual) है। इसे बुद्धिवाद को कठोरतावाद भी कहा जाता है। कान्ट के अनुसार नैतिक नियम सामान्य होते है। चूंकि बुद्धि के आदेश ही नैतिक नियम है और बुद्धि सभी मनुष्यों में समान

है। नैतिक नियम अनुभव निरपेक्ष है, अनुभवजन्य नहीं। ये मनुष्य को अनुभव के द्वारा प्राप्त नहीं होते हैं। कान्ट ने कहा है कि इस जगत की दो ही वस्तुएँ मानव में भय भर देती हैं। ऊपर में आसमान के तारे और अन्दर में नैतिक नियम ये दोनों ही एक ही तरह अचल हैं। इस प्रकार कान्ट के अनुसार बुद्धि के दो रूप हैं - (i) शुद्ध बुद्धि (Pure Reason) (ii) व्यावहारिक बुद्धि (Practical Reason)।

शुद्ध बुद्धि का विश्लेषण करके कान्ट ने बुद्धि की सीमाएँ तथा नैतिकता की तीन मान्यताएँ स्थापित किया है (i) संकल्प की स्वतंत्रता (ii) आत्मा की अमरता और (iii) ईश्वर के अस्तित्व में आस्था।

(i) संकल्प की स्वतंत्रता :→ नीति के क्षेत्र में बुद्धि नैतिकता के आधारों या मान्यताओं को नहीं समझ सकती। अतः इन आधारों पर विश्वास या श्रद्धा ही रखनी पड़ती है। संकल्प की स्वतंत्रता नीतिशास्त्र की मौलिक मान्यता है। यदि मनुष्य के समस्त संकल्प बाह्य प्रकृति द्वारा नियंत्रित है तो फिर नैतिकता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। कान्ट का तात्पर्य है कि "तुझे करना चाहिए, इसलिए तू कर सकता है।"

(ii) आत्मा की अमरता :→ इच्छा और कर्तव्य के सतत संघर्षों का महत्व ही जीवन है की नैतिकता है। परन्तु यह कार्य इतना कठिन है कि एक सीमित जीवन में उसको पूर्ण करना असम्भव लगता है। अतः अनेक जीवन न होने पर नैतिकता का ध्येय प्राप्त होने की सम्भावना नहीं रह जायेगी। इसलिए यह मानना आवश्यक है कि शरीर के मरने के बाद भी आत्मा नहीं मरती। और अन्य शरीर में जीवन धारण करती है।

(iii) ईश्वर के अस्तित्व में आस्था :→ संसार में हम देखते हैं कि नैतिक नैतिकता का परिणाम हमेशा अच्छा ही नहीं होता बल्कि कडुवा, बुरे लोग ही फलते-फूलते देखे जाते हैं। कान्ट के अनुसार सुख और आनन्द मिलकर ही पूर्ण सुख होता है। अतः यदि सुखी व्यक्ति को इस संसार में कष्ट मिलता है और नैतिक नियम अच्छे हैं तो यह मानना आवश्यक

है कि ईश्वर इन्हें परलोक में सुख देगा। अतः ईश्वर शुभ और आनन्द का समन्वय करके पूर्ण शुभ की स्थापना करता है और अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा फल देकर नैतिकता को स्थिर रखता है।

काण्ट परमश्रेय के कारण ईश्वर के अस्तित्व की मान्यता देते हैं इनके अनुसार सद्गुण ही परमश्रेय है क्योंकि नैतिकता ही सर्वोच्च श्रेय है तथा सद्इच्छा स्वयं ही शुभ है। काण्ट के शब्दों में "इस संसार में अथवा इसके बाहर भी सद्इच्छा के अतिरिक्त कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जो ~~अपनी ज्योति~~ निरपेक्ष रूप से शुभ हो।" सद्इच्छा ही एकमात्र रत्न है जो अपनी ज्योति से जगमगाता है। शुभ ही सद्इच्छा है तथा निरपेक्ष आदेश को पूर्ण करना ही शुभ है अतः कर्तव्य के लिए कर्तव्य करना ही परमश्रेय है। जो ईश्वर के अस्तित्व के बिना सम्भव नहीं है।

काण्ट के अनुसार नैतिक नियम का स्वरूप → काण्ट के अनुसार नैतिक नियम निरपेक्ष आदेश है। उसके ऊपर कोई नियम नहीं है। कर्तव्य प्रत्येक दशा में कर्तव्य है। नैतिक नियम सार्वभौम है। वे बुद्धि के स्वरूप से ही उत्पन्न होते हैं। उनका आधार मानव का नैतिक स्वभाव है। शुभ संकल्प परम शुभ है तथा बुद्धिपरक है। अन्य वस्तुएं सीमित रूप से शुभ हैं क्योंकि विशेष परिस्थितियों में ही उनका महत्व है। परन्तु शुभ संकल्प प्रत्येक परिस्थिति में शुभ है क्योंकि उसका शुभत्व उसके परिणाम पर निर्भर नहीं है। इच्छाओं और भावनाओं से किये गए कर्म अनैतिक हैं, चाहे वे इच्छाएँ कितनी ही पवित्र और वे भावनायें कितनी भी ऊँची क्यों न हो। नैतिक गुण, आन्तरिक गुण है। काण्ट का आदेश है "कर्तव्य करो चाहे परिणाम कुछ भी हो।" नैतिक नियम अनुभव निरपेक्ष है उसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। काण्ट के मतानुसार यदि सत्य बोलना नैतिक कर्तव्य है तो प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक परिस्थिति में सत्य बोलना चाहिए। महाभारत के युद्ध में युधिष्ठिर का द्रोणाचार्य से बोला हुआ झूठ काण्ट के मत में घोर अनैतिक कार्य है।

कान्ट, नैतिक नियम के स्वरूप में मुख्य रूप से दो सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं – (i) नैतिक निर्णय निरपेक्ष निर्णय है और (ii) कर्तव्य कर्तव्य के लिए होना चाहिए।

(i) नैतिक निर्णय निरपेक्ष निर्णय है :→ कान्ट के अनुसार नैतिक नियम बुद्धि के आदेश हैं और अन्य नियम इच्छाओं से प्रेरित होते हैं। इच्छाओं से प्रेरित नियम केवल सापेक्ष हैं वे बाह्य परिणाम और सहानुभूति पर निर्भर हैं। संवेदनात्मक जीवन के नियम बौद्धिक नियमों के विरुद्ध हैं। बाह्य कर्म केवल सांकेतिक आदेश हो सकता है। जैसे – धन कमाना कोई निरपेक्ष आदेश नहीं हो सकता क्योंकि वह व्यक्ति की परिस्थिति आवश्यकता और योग्यता पर निर्भर है। नैतिक नियम बौद्धिक नियम होने के कारण निरपेक्ष आदेश है। उनमें अपवाद के लिए कोई स्थान नहीं है और सभी अवस्थाओं में उनका पालन होना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य आदेश अनुभव पर आधारित हैं। नैतिक आदेश अनुभवपूर्व हैं। वे क्या से नहीं बल्कि चाहिए से संबंधित हैं। वे तथ्यात्मक नहीं बल्कि आदेशात्मक हैं।

(ii) कर्तव्य, कर्तव्य के लिए होना चाहिए :→ कान्ट ने नैतिक नियमों के निरपेक्ष निर्णय की चरितार्थ करने के लिए कर्मों के लिए कर्तव्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इनके अनुसार नैतिक जीवन स्वशासित जीवन है। नैतिक आदेश व्यावहारिक बुद्धि के आदेश हैं। जीवन का ध्येय सुख नहीं। व्यावहारिक बुद्धि स्वयं ही अपने ऊपर नैतिक नियम लागू करती है। नैतिक जीवन में भावना के लिए कोई स्थान नहीं है। कान्ट के अनुसार किसी दुःख से दुःखी होकर उसकी सहायता करना नैतिक नहीं है। कर्मों का मूल्य उनके परिणाम पर निर्भर न होकर हेतु पर निर्भर है। कर्म करने में केवल एक ही उचित प्रेरक कारण हो सकता है और वह है नैतिक नियम के प्रति आस्था। कर्तव्य, प्रेम, सहानुभूति आदि मधुर गुणों का पालन मोह वश नहीं बल्कि कर्तव्य के लिए कर्तव्य किया जाना चाहिए। क्योंकि कर्तव्य में बाध्यता है और उसका आदेश परम आदेश है। वह व्यक्ति की इच्छा, अनिच्छा पर निर्भर नहीं है।

अन्य आदेशों में कार्य-कारण सम्बन्ध होता है लेकिन नैतिक नियम में कार्य-कारण का कोई स्थान नहीं है। वे न तो अनुभव पर आधारित है और न तो अनुभव उनको प्रमाणित ही करते है क्योंकि नैतिक नियम सार्वभौम है कर्तव्य सभी परिस्थितियों में अनिवार्य है।

(5) आलोचना :→ काण्ट के नैतिक नियम की निरपेक्षता और कर्तव्य के लिए कर्तव्य के सिद्धान्त में निम्नलिखित त्रुटियाँ है

i) प्रो० जैक्योबी के अनुसार काण्ट का संकल्प ऐसा संकल्प है जो संकल्प नहीं करता। संकल्प नहीं करने के कारण विषयहीन हो जाता है। काण्ट का नैतिक नियम केवल आकार मात्र है। उससे यह नहीं ज्ञात होता कि विशेष परिस्थिति में हमारा कर्तव्य क्या है?

ii) कर्तव्य के लिए कर्तव्य का सिद्धान्त एक मनोवैज्ञानिक द्वैत पर आधारित है। काण्ट बुद्धि और भावनाओं को परस्पर विरुद्ध मानते है वे यह भूल जाते है कि ये दोनों ही आत्मा के अधीन अंग है। संवेदनशील ही नैतिक जीवन की विषयवस्तु है उसके बिना कोई कार्य समान ही नहीं है। क्योंकि प्रत्येक कार्य का कोई प्रेरक आवश्यक होता है।

iii) नैतिक जीवन के भावना से पूर्ण बहिष्कार करदेने से काण्ट का मत कठोर हो गया है। उसने भावना को कठोर निग्रह करने का आदेश दिया है। इस प्रकार अनुभूति शून्य जीवन एकांगी हो जायेगा। आत्मा लाभ ही सर्वोच्च श्रेय है और अनुभूतियों को निष्काम कर देने से वह उस सीमा तक असम्भव हो जाएगा। काण्ट का यह सिद्धान्त भी सुखवादियों की तरह एकांगी है। प्रो० जैक्योबी के अनुसार "नियम मनुष्य के लिए बनते है मनुष्य नियम के लिए नहीं बनता है।" व्यावहार में मनुष्य आँख बन्दकरके नियम का पालन नहीं करता। काण्ट का यह नियम इतना कठोर है कि समाज में या चिरस्थायी नहीं हो सकता।

(iv) काण्ट का यह कहना कि नैतिक पुरुष वास्तव में अपने विरोधी जीवन में या तथा नैतिकता के लिए मानव संघर्ष करता रहता है साथ ही जब संघर्ष जितना ही अधिक होगा उतना ही नैतिकता कम होगा। काण्ट के इस मत में

07

...न लेने से समाज में अव्यवस्था फैल जायेगा क्योंकि यह ...कार जहाँ एक और नैतिक बात की कसौटी पर करने की आवश्य...ता दिखलाता है, तथा दूसरी ओर संघर्ष को अनिवार्य भी बना देता ...भी उचित नही है।

(4) नैतिक नियम को सर्वथा मानकर काण्ट ने किसी भी अपवाद की अनुमति नही देते हैं लेकिन व्यावहारिकता में कुछ बात तो अपवाद ...होने के कारण ही श्रेष्ठ होती है। ब्रह्मचर्य का पालन सभी कर सकते हैं। सभी के पालन करने से स्वयं ब्रह्मचारियों का ही लोप हो जायेगा। ...योंकि सृष्टि के उत्पत्ति ही रुक जायगी।

1997

काण्ट का नैतिक सूत्र (Moral Maxims) :→ काण्ट के अनुसार नैतिक प्राणी के रूप में व्यक्तित्व जो स्वतंत्र है। मानव स्वशासित है अतः उसका लक्ष्य आत्म नियंत्रित होता है। मानव एक ओर से जो संवेदनशील प्राणी है और दूसरी ओर बौद्धिक प्राणी है। इन्द्रियां मनुष्य को सदैव अपनी ओर खींचती है। और अन्धे के समान चलाती है परन्तु उसकी नैतिक चेतना सदैव याद दिलाती है कि वह इन्द्रियों की दासता से मुक्त है इसके लिए काण्ट ने कर्तव्य के लिए कर्तव्य, निरपेक्ष नियम बनाया। लेकिन काण्ट ने यह देखा कि केवल कर्तव्य के लिए कर्तव्य से, निरपेक्ष से जीवन में व्यावहारिक आचरण के लिए समुचित निर्देश नहीं मिलता और नैतिक नियम आकार मात्र हो जाता है। उनका व्यवहार में उतारने के लिए कुछ व्यावहारिक नियमों की भी आवश्यकता है। अतः काण्ट ने तीन व्यावहारिक नैतिक सूत्र व्यक्त की है —

(1) सार्वभौमिकता का नियम या सूत्र :→ "सदा उस सिद्धान्त के अनुसार कार्य करो और केवल उस सिद्धान्त के लिए कार्य करो जिसे तुम एक सार्वभौम नियम बन जाने की इच्छा करो।" इस वाक्य को समझाने के लिए काण्ट सपथ तोड़ने का उदाहरण देते हैं। यदि सपथ तोड़ने का कोई नियम सार्वभौम हो जाय अर्थात प्रत्येक व्यक्ति सपथ तोड़ने लगे तो सपथ लेने का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। इसी प्रकार अत्यन्त निराश होने पर कोई व्यक्ति आत्महत्या करने की सोच सकता है परन्तु यह इसलिए अनुचित है कि यह सार्वभौम नियम नहीं बन

सकता क्योंकि सभी मनुष्य आत्महत्या करने लगे तो शीघ्र ही कोई भी मनुष्य आत्महत्या करने के लिए नहीं बचेगा।

आलोचना :→ (i) निश्चित नैतिक नियम का अभाव :→ काण्ट के अपने इस प्रथम नैतिक सूत्र से नैतिकता का एक निश्चित स्वरूप नहीं है। किसी कार्य की नैतिकता उसकी परिस्थिति पर निर्भर रहती है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थिति भिन्न-भिन्न रहती है। अतः यह कैसा कहा जा सकता है। मैं एक परिस्थिति में जो कुछ करता हूँ वह सभी को करना चाहिए।

(ii) कठोरवाद :→ यह नियम अपवाद का कोई स्थान नहीं देता और इस कारण कठोरवाद कहा जाता है। जैसाकि प्रो० जेम्स ने कहा है कि "नियम मनुष्य के लिए बनता है, मनुष्य नियम के लिए नहीं।"

(iii) अव्यावहारिक :→ काण्ट के इस सूत्र में नीतिशास्त्र के सामाजिक पक्ष मजबूत हो जाता है, लेकिन कठोरवाद नियम वाही होने के कारण व्यवहार में लाना कठिन हो जाता है। अतः यह अव्यावहारिक कहा जाता है।

(2) मनुष्यता को साध्य मानने का नियम :→ "इस प्रकार कार्य करो कि मानवता का चाहे वह तुम्हारे अपने व्यक्तित्व में हो अथवा किसी दूसरे व्यक्तित्व में, सदैव साध्य के रूप में प्रयोग करो साधन के रूप में नहीं।" इस नियम के अनुसार किसी भी व्यक्ति को आत्महत्या करने का अधिकार नहीं है। आत्महत्या इसलिए बुरा है कि क्योंकि ऐसा करनेवाला व्यक्ति अपनी अन्तरस्थ मानवता का समुचित आदर नहीं करता और स्वयं को सुख भोग का एक साधन मात्र बनाता है। जैसे- यदि कोई विद्यार्थी अपने माता-पिता की इच्छा से अपना अध्ययन छोड़ देती वह अनुचित होगा क्योंकि ऐसा करके वह स्वयं अपने माता-पिता की इच्छा को सन्तुष्ट करने का साधन बना रहा है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को इस बात का अधिकार नहीं है कि वह दूसरों को शोषण करे, झूठ बोलना इसलिए बुरा है क्योंकि ऐसा करके झूठ बोलनेवाला व्यक्ति दूसरों को धोखा देता है और उन्हें अपने स्वार्थ के साधन के रूप में प्रयोग करता है। हम अपने और दूसरों की आदर आदर करना चाहिए।

काण्ट अपने इस सूत्र से एक अन्य नियम निकाला

है कि "सदैव अपने को पूर्ण करने की चेष्टा करो और अनुकूल परिस्थितियों उत्पन्न करके दूसरों को सुखी बनाने की चेष्टा करो। क्योंकि दूसरों को पूर्ण नहीं बना सकते पूर्णता प्राप्त के लिए संकल्प शक्ति और संयम की आवश्यकता है। और कोई भी दूसरे को संयमित नहीं कर सकता वह केवल ऐसी परिस्थिति में जुटा सकता है जिससे उनका आनन्द बढ़े। काण्ट ने अपने इस उपनियम से मनुष्य की कुछ परिस्थितियों साधन के रूप में काम करने को नैतिक मानता है। जैसे - ज्ञान का विस्तार करने, देशरक्षा करने, सत्य की शोध करने में आदि कार्यों में अपना जीवन बलिदान भी विशेष परिस्थिति में नैतिक ही होते है।

3. साध्यों के राज्य के नियम या सूत्र :→ "एक साध्यों राज्य के एक सदस्य के रूप में कार्य करो।" अर्थात इस प्रकार कार्य करो कि स्वयं को और प्रत्येक अर्थवाले व्यक्ति को वास्तविय साध्य वाला समझकर व्यवहार करो। एक ऐसे समाज के सदस्य के रूप में व्यवहार करो जिससे प्रत्येक दूसरे की शुभ को अपने से सामान्य मूल्य समझता हो। और उसके साथ बाकि लोग भी इसी प्रकार व्यवहार करे जिससे भी प्रत्येक साध्य और साधन हो। जिससे दूसरों के शुभ की वृद्धि करते हुए प्रत्येक अपना सुख प्राप्त करो। इस काण्ट एक ऐसे साध्यों राज्य की स्थापना करते है जो कि आदर्श समाज है और जिसमे सभी सदस्य नैतिक नियम का पालन करते है। उस समाज का प्रयोग करके भी स्वनीत होता है। स्वयं ही अपने ऊपर नैतिक नियम को लागू करता है। जो उसका आन्तरिक बौद्धिक नियम है। काण्ट के अनुसार नैतिक नियम न तो बाह्य नियम है और न दैवी आदेश है। वह आत्म आरोपित है उसका पालन किसी बाहरी दबाव पर आधारित नही है। इस पूर्ण समाज में सभी व्यक्ति स्वतंत्र बुद्धि परख और सुखी होगी। लेकिन इसके लिए सद्गुण और आनन्द का सामंजस्य आवश्यक है।

निष्कर्ष या उपदेश [illegible]